

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तुमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये बालकाणे
॥ सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥

पुत्रैः सुषाभिश्च सह दशरथस्यायोध्यायां प्रवेशः, शक्रहनुसहितस्य
भरतस्य मातुलगृहे गमनं श्रीरामस्य सद्वृत्त्या समेषां सन्तोषः,
श्रीसीतारामयोर्मिथः प्रेम्णेया रर्णनम्

गते रामे प्रशान्तात्मा रामो दाशरथिर्धनुः।
ररुणायाप्रमेयाय ददौ हस्ते महायशाः ॥ 1.77.1 ॥

अभिराद्य ततो रामो रसिष्ठप्रमुखानृषीन्।
पितरं रिकलं दृष्ट्वा प्रोराच रघुनन्दनः ॥ 1.77.2 ॥

जामदग्न्या गतो रामः प्रयातु चतुरङ्गिणी।
अयोध्याभिमुखी सेना ररया नाथेन पालिता ॥ 1.77.3 ॥

रामस्य रचनं ऋरा राजा दशरथः सुतम्।
बाह्यां सम्परिष्वज्य मूर्ध्नुपाघ्राय राघरम् ॥ 1.77.4 ॥

गतो राम इति ऋरा हृष्टः प्रमुदितो नृपः।
पुनर्जातं तदा मेने पुत्रमात्मानमेर च ॥ 1.77.5 ॥

चोदयामास तां सेनां जगामाशु ततः पुरीम्।
पताकाध्रजिनीं रम्यां तूर्योदधुष्टनिनादिताम् ॥ 1.77.6 ॥

सिक्तराजपथारम्यां प्रकीर्णकुसुमोकराम्।
राजप्रवेशसुमुथैः पौरैर्मङ्गलपाणिभिः ॥ 1.77.7 ॥

সম্পূর্ণাং প্রারিশদ্ রাজা জনৌঘৈঃ সমলকৃতাম্।
পৌরৈঃ প্রত্যুদগতো দুরং দ্বিজৈশ্চ পুররাসিভিঃ ॥ 1.77.8 ॥

পুত্রৈরনুগতঃ শ্রীমাৎশ্রীমদ্ভিষ্চ মহাযশাঃ।
প্ররিরেশ গৃহং রাজা হিমরৎসদৃশং প্রিয়ম্ ॥ 1.77.9 ॥

ননন্দ স্বজনৈ রাজা গৃহে কামৈঃ সুপূজিতঃ।
কৌসল্যা চ সুমিত্রা চ কৈকেয়ী চ সুমধ্যমা ॥ 1.77.10 ॥

রধুপ্রতিগ্রহে যুক্তা যাশ্চান্যা রাজযোষিতঃ।
ততঃ সীতাং মহাভাগামূর্মিলাং চ যশস্বিনীম্ ॥ 1.77.11 ॥

কুশধ্বজসুতে চোভে জগৃহ্নৃপযোষিতঃ।
মঙ্গলালাপনৈর্হোমৈঃ শোভিতাঃ ক্ষৌমরাসসঃ ॥ 1.77.12 ॥

দেবতায়তনান্যাশু সর্য়াস্তাঃ প্রত্যপূজযন্।
অভিরাদ্যাভিরাদ্যাংশ্চ সর্য়া রাজসুতাস্তদা ॥ 1.77.13 ॥

রেমিরে মুদিতাঃ সর্য়া ভর্তৃভির্মুদিতা রহঃ।
কৃতদারাঃ কৃতাস্ত্রাশ্চ সধনাঃ সসুহৃজ্জনাঃ ॥ 1.77.14 ॥

শুক্রমমাণাঃ পিতরং র্তযন্তি নরর্ষভাঃ।
কস্যচিৎকথ কালস্য রাজা দশরথঃ সুতম্ ॥ 1.77.15 ॥

ভরতং কৈকযীপুত্রমব্রবীদ্ রঘুনন্দনঃ।
অযং কেকযরাজস্য পুত্রো রসতি পুত্রক ॥ 1.77.16 ॥

ৎরাং নেতুমাগতো বীরো যুধাজিন্মাতুলস্তর।
শ্ৰৎরা দশরথস্যৈতদ্ ভরতঃ কৈকযীসুতঃ ॥ 1.77.17 ॥

গমনাযাভিচক্রাম শক্রঘ্নসহিতস্তদা।
আপৃচ্ছ পিতরং শুরো রামং চাক্লিষ্টকারিণম্ ॥ 1.77.18 ॥

মাতৃশ্চাপি নরশ্ৰেষ্ঠঃ শক্রঘ্নসহিতো যযৌ।
যুধাজিৎ প্রাপ্য ভরতং সশক্রঘ্নং প্রহর্ষিতঃ ॥ 1.77.19 ॥

স্বপুরং প্রারিশদ্ বীরঃ পিতা তস্য তুতোষ হ।
গতে চ ভরতে রামো লক্ষ্মণশ্চ মহাবলঃ ॥ 1.77.20 ॥

পিতরং দেবসঙ্ক্ৰাশং পূজযামাসতুস্তদা।
পিতুরাজ্ঞাং পুরস্কৃত্য পৌরকার্যাণি সর্ষশঃ ॥ 1.77.21 ॥

চকার রামঃ সর্বাণি প্রিয়াণি চ হিতানি চ।
মাতৃভ্যো মাতৃকার্যাণি কুৎরা পরমযন্ত্রিতঃ ॥ 1.77.22 ॥

গুরুণাং গুরুকার্যাণি কালে কালেহ্নরৈক্ষত।
এরং দশরথঃ প্রীতো ব্রাহ্মণা নৈগমাস্তথা ॥ 1.77.23 ॥

রামস্য শীলবৃত্তেন সর্বে বিষয়রাসিনঃ।
তেষামতিযশা লোকে রামঃ সত্যপরাক্রমঃ ॥ 1.77.24 ॥

স্বযজ্ঞুরির ভূতানাং বভূর গুণরত্তরঃ।
রামশ্চ সীতয়া সার্ধং বিজহার বহুনুতুন্ ॥ 1.77.25 ॥

মনস্বী তদগতমনাস্তস্য হৃদি সমর্পিতঃ।
প্রিয়া তু সীতা রামস্য দারাঃ পিতৃকৃতা ইতি ॥ 1.77.26 ॥

গুণাদ্রপগুণাচ্চাপি প্রীতিভূয়োহভিরর্ধতে।
তস্যশ্চ ভর্তা দ্বিগুণং হৃদয়ে পরিবর্ততে ॥ 1.77.27 ॥

অন্তর্গতমপি ব্যক্তমাখ্যাতি হৃদযং হৃদা।
তস্য ভূয়ো বিশেষেণ মৈথিলী জনকান্বজা।
দেবতাভিঃ সমা রূপে সীতা শ্রীরির রূপিণী ॥ 1.77.28 ॥

তযা স রাজর্ষিসুতোহভিকামযা
সমেথিরানুওমরাজকন্যযা।
অতীর রামঃ শুশুভে মুদান্নিতো
রিভুঃ প্রিযা রিষ্ণুরিরামরেশ্বরঃ ॥ 1.77.29 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীযে আদিকার্যে বালকাণ্ডে সপ্তসপ্ততমঃ সর্গঃ ॥